

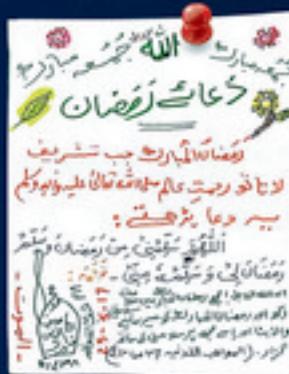


अमीरे अहले सुन्नत عليه السلام की किताब "फैजाने रमजान" से लिये गए मवाद की पांचवीं किस्त

Sahari Ka Durust Waqt (Hindi)

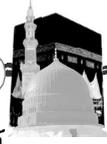
कुल सफ़ाहत 32

सहरी का दुरुस्त वक़्त



शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इब्न्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी كَامِلَاتُ رِبَاكَاتِهِم
الْعَالِيَةِ



أَحْمَدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज् : शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़

लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम
पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले।

(المستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना
व बक्कीअ
व मग़िफ़रत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत
क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ
मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म
हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न
उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عسكراج ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त्बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में
आगे पीछे हो गए हों तो मक्कतुल मदीना से रूजअ फ़रमाइये।



सहरी का दुरुस्त वक्त

येह रिसाला (सहरी का दुरुस्त वक्त)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دامت बरकतुहुम अलैहि ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्कतबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = ف	प = پ	भ = ب	ब = ب	अ = ا
स = س	ठ = ث	ट = ت	थ = ث	त = ت
ह = ح	छ = ح	च = ج	झ = ج	ज = ج
ढ = د	ड = د	ध = د	द = د	ख = خ
ज़ = ز	ढ = د	ड़ = د	र = ر	ज़ = ز
ज़ = ض	स = س	श = ش	स = س	ज़ = ز
फ़ = ف	ग़ = غ	अ = ع	ज़ = ج	त = ط
घ = گ	ग = گ	ख = ک	क = ک	क = ق
ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = ی	इ = ا	ऐ = ا	ए = ا	य = ی

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक्कतबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hindibook@dawateislamihind.net



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

٢ ١ ٢ ٣ ٤ ٥ ٦ ٧ ٨ ٩ ١٠ ١١ ١٢ ١٣ ١٤ ١٥ ١٦ ١٧ ١٨ ١٩ ٢٠ ٢١ ٢٢ ٢٣ ٢٤ ٢٥ ٢٦ ٢٧ ٢٨ ٢٩ ٣٠ ٣١ ٣٢ ٣٣ ٣٤ ٣٥ ٣٦ ٣٧ ٣٨ ٣٩ ٤٠ ٤١ ٤٢ ٤٣ ٤٤ ٤٥ ٤٦ ٤٧ ٤٨ ٤٩ ٥٠ ٥١ ٥٢ ٥٣ ٥٤ ٥٥ ٥٦ ٥٧ ٥٨ ٥٩ ٦٠ ٦١ ٦٢ ٦٣ ٦٤ ٦٥ ٦٦ ٦٧ ٦٨ ٦٩ ٧٠ ٧١ ٧٢ ٧٣ ٧٤ ٧٥ ٧٦ ٧٧ ٧٨ ٧٩ ٨٠ ٨١ ٨٢ ٨٣ ٨٤ ٨٥ ٨٦ ٨٧ ٨٨ ٨٩ ٩٠ ٩١ ٩٢ ٩٣ ٩٤ ٩٥ ٩٦ ٩٧ ٩٨ ٩٩ ١٠٠

सहरी का दुरुस्त वक़्त

रोज़े की निय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़े के लिये निय्यत शर्त है। लिहाज़ा “बे निय्यते रोज़ा अगर कोई इस्लामी भाई या इस्लामी बहन सुबहे सादिक् के बा’द से ले कर गुरुबे आफ़ताब तक बिल्कुल न खाए पिये तब भी उस का रोज़ा न होगा” (माखुड़ाउ रडुअल्लुख़्तार ३ ज ३१३) रमज़ान शरीफ़ का रोज़ा हो या नफ़ल या नज़े मुअय्यन का रोज़ा (या’नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी मख़्पूस दिन के रोज़े की मन्त मानी हो मसलन खुद सुन सके इतनी आवाज़ से यूं कहा हो कि “मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इस साल रबीउल अव्वल शरीफ़ की हर पीर शरीफ़ का रोज़ा है।” तो यह नज़े मुअय्यन है और इस मन्त का पूरा करना वाजिब हो गया।) इन तीनों किस्म के रोज़ों के लिये गुरुबे आफ़ताब के बा’द से ले कर “निस्फुन्नहारे शरई” (इसे ज़हवए कुब्रा भी कहते हैं) से पहले पहले तक जब भी निय्यत कर लें रोज़ा हो जाएगा।

(डुर्मुख़्तार ورुअल्लुख़्तार ३ ज ३१३)

निस्फुन्नहारे शरई का वक़्त मा’लूम करने का तरीक़ा :

जिस दिन का निस्फुन्नहारे शरई मा’लूम करना हो उस दिन के सुबहे सादिक् से ले कर गुरुबे आफ़ताब तक का वक़्त शुमार कर लीजिये और उस सारे वक़्त के दो हिस्से कर लीजिये पहला आधा हिस्सा ख़त्म होते



फरमाने मुस्तफा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिन्न हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े ! (त्रुमदी)

ही “निस्फुन्नहारे शर्ई” का वक्त शुरूअ हो गया। मसलन आज सुब्हे सादिक् ठीक पांच बजे है और गुरूबे आफ़ताब ठीक छे⁶ बजे। तो दोनों के दरमियान का वक्त कुल तेरह घन्टे हुवा, इन के दो हिस्से करें तो दोनों में का हर एक हिस्सा साढ़े छे⁶ घन्टे का हुवा। अब सुब्हे सादिक् के पांच बजे के बा’द वाले इब्तिदाई साढ़े छे⁶ घन्टे साथ मिला लीजिये, तो इस तरह दिन के साढ़े ग्यारह बजे के फ़ौरन बा’द “निस्फुन्नहारे शर्ई” का वक्त शुरूअ हो गया तो अब इन तीन तरह के रोज़ों की निव्यत नहीं हो सकती।

(رَبُّ الْمُحْتَارِ ج ٣ ص ٣٩٣ مَلْخَمًا)

बयान कर्दा तीन किस्म के रोज़ों के इलावा दीगर जितनी भी अक्सामे रोज़ा हैं उन सब के लिये येह लाज़िमी है कि रातों रात या’नी गुरूबे आफ़ताब के बा’द से ले कर सुब्हे सादिक् तक निव्यत कर लीजिये, अगर सुब्हे सादिक् हो गई तो अब निव्यत नहीं हो सकेगी। मसलन क़ज़ाए रोज़ए रमज़ान, कफ़ारे के रोज़े, क़ज़ाए रोज़ए नफ़ल (रोज़ए नफ़ल शुरूअ करने से वाजिब हो जाता है, अब बे उज़्रे शर्ई तोड़ना गुनाह है। अगर किसी तरह से भी टूट गया ख़्वाह उज़्र से हो या बिला उज़्र, इस की क़ज़ा बहर हाल वाजिब है) “रोज़ए नज़े ग़ैरे मुअय्यन” (या’नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये रोज़े की मन्नत तो मानी हो मगर दिन मख़्पूस न किया हो इस मन्नत का भी पूरा करना वाजिब है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मानी हुई हर शर्ई मन्नत का पूरा करना वाजिब है जब कि ज़बान से इस तरह के अल्फ़ाज़ इतनी आवाज़ से कहे हों कि खुद सुन सके, मसलन इस तरह कहा : “मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक रोज़ा है” अब चूँकि इस में दिन मख़्पूस नहीं किया कि कौन सा रोज़ा रखूंगा लिहाज़ा जिन्दगी में जब भी मन्नत



फरमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ السَّلَامُ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (ابن سنی)

(جَوْهَرَه ج ۱ ص ۱۷۰) کے لیے आज इस रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा रखूंगा ।

4 अरबी में निय्यत के कलिमात अदा करने उसी वक्त निय्यत शुमार किये जाएंगे जब कि उन के मा'ना भी आते हों, और येह भी याद रहे कि ज़बान से निय्यत करना ख़्वाह किसी भी ज़बान में हो उसी वक्त कारआमद होगा जब कि उस वक्त दिल में भी निय्यत मौजूद हो । (ایضاً)

5 निय्यत अपनी मादरी ज़बान में भी की जा सकती है, अरबी में करें ख़्वाह किसी और ज़बान में, निय्यत करते वक्त दिल में इरादा मौजूद होना शर्त है, वरना बे ख़याली में सिर्फ़ ज़बान से रटे रटाए जुम्ले अदा कर लेने से निय्यत न होगी । हां ज़बान से रटी हुई निय्यत कह ली मगर बा'द में निय्यत के लिये मुकर्ररा वक्त के अन्दर दिल में भी निय्यत कर ली तो अब निय्यत सहीह है ।

(رُدُّالْمَحْتَرَج ۳ ص ۳۲۲)

6 अगर दिन में निय्यत करें तो ज़रूरी है कि येह निय्यत करें कि मैं सुब्हे सादिक् से रोज़ादार हूं । अगर इस तरह निय्यत की, कि अब से रोज़ादार हूं सुब्हे से नहीं, तो रोज़ा न हुवा ।

(جَوْهَرَه ج ۱ ص ۱۷۰ و رُدُّالْمَحْتَرَج ۳ ص ۳۹۴)

7 दिन में वोह निय्यत काम की है कि सुब्हे सादिक् से निय्यत करते वक्त तक रोज़े के ख़िलाफ़ कोई अम्र (या'नी मुआमला) न पाया गया हो । अलबत्ता सुब्हे सादिक् के बा'द भूल कर खा पी लिया या जिमाअ कर लिया तब भी निय्यत सहीह हो जाएगी ।

(مُلَخَّص از رُدُّالْمَحْتَرَج ۳ ص ۳۶۷)



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

﴿8﴾ आप ने अगर यूं निय्यत की, कि “कल कहीं दा’वत हुई तो रोज़ा नहीं और न हुई तो रोज़ा है।” यह निय्यत सहीह नहीं, आप रोज़ादार न हुए। (عالمگیری ج ۱ ص ۱۹۰)

﴿9﴾ माहे रमज़ान के दिन में न रोज़े की निय्यत की न यह कि “रोज़ा नहीं” अगर्चे मा’लूम है कि यह रमज़ानुल मुबारक का महीना है तो रोज़ा न होगा। (عالمگیری ج ۱ ص ۱۹۰)

﴿10﴾ गुरूबे आप़ताब के बा’द से ले कर रात के किसी वक्त में भी निय्यत की फिर इस के बा’द रात ही में खाया पिया तो निय्यत न टूटी, वोह पहली ही काफ़ी है फिर से निय्यत करना ज़रूरी नहीं। (جَوَهْرَه ج ۱ ص ۱۷۰)

﴿11﴾ आप ने अगर रात में रोज़े की निय्यत तो की मगर फिर रातों रात पक्का इरादा कर लिया कि “रोज़ा नहीं रखूंगा” तो अब वोह आप की, की हुई निय्यत जाती रही। अगर नई निय्यत न की और दिन भर रोज़ादारों की तरह भूके प्यासे रहे तो रोज़ा न हुवा। (دُرِّمُخْتَار ج ۳ ص ۳۹۸)

﴿12﴾ दौराने नमाज़ कलाम (बातचीत) की निय्यत तो की मगर बात नहीं की तो नमाज़ फ़ासिद न होगी। इसी तरह रोज़े के दौरान तोड़ने की सिर्फ़ निय्यत कर लेने से रोज़ा नहीं टूटेगा जब तक तोड़ने वाली कोई चीज़ न करे। (جَوَهْرَه ج ۱ ص ۱۷۰)

﴿13﴾ सहरी खाना भी निय्यत ही है ख़्वाह माहे रमज़ान के रोज़े के लिये हो या किसी और रोज़े के लिये मगर जब सहरी खाते वक्त यह इरादा है कि सुब्ह को रोज़ा न रखूंगा तो यह सहरी खाना निय्यत नहीं। (أَيْضاً ص ۱۷۶)



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

﴿14﴾ रमज़ानुल मुबारक के हर रोज़े के लिये नई निय्यत ज़रूरी है।

पहली तारीख़ या किसी भी और तारीख़ में अगर पूरे माहे रमज़ान के रोज़े की निय्यत कर भी ली तो येह निय्यत सिर्फ़ उसी एक दिन के हक़ में है, बाकी दिनों के लिये नहीं। (ایضاً)

﴿15﴾ अदाए रमज़ान और नज़्रे मुअय्यन और नफ़ल के इलावा बाकी रोज़े मसलन क़ज़ाए रमज़ान और नज़्रे ग़ैरे मुअय्यन और नफ़ल की क़ज़ा और नज़्रे मुअय्यन की क़ज़ा और कफ़फ़ारे का रोज़ा और तमत्तोअ¹ का रोज़ा इन सब में ऐन सुब्ह चमक्ते (या'नी ठीक सुब्हे सादिक़ के) वक्त या रात में निय्यत करना ज़रूरी है और येह भी ज़रूरी है कि जो रोज़ा रखना है ख़ास उसी मख़सूस रोज़े की निय्यत करें। अगर इन रोज़ों की निय्यत दिन में (या'नी सुब्हे सादिक़ से ले कर ज़हवए कुब्रा से पहले पहले) की तो नफ़ल हुए फिर भी इन का पूरा करना ज़रूरी है, तोड़ेंगे तो क़ज़ा वाजिब होगी, अगर्चे येह बात आप के इल्म में हो कि मैं जो रोज़ा रखना चाहता था येह

دينه
1 : हज़ की तीन किस्में हैं (1) क़िरान (2) तमत्तोअ (3) इफ़राद। क़िरान और तमत्तोअ वाले पर हज़ अदा करने के बा'द बतौर शुक्राना हज़ की कुरबानी करना वाजिब है जब कि इफ़राद वाले के लिये मुस्तहब। अगर क़िरान और तमत्तोअ वाले बहुत ज़ियादा मिस्कीन और मोहताज हैं मगर क़िरान और तमत्तोअ की निय्यत कर ली है और अब इन के पास न कोई कुरबानी के लाइक़ जानवर है न रक़म न ही कोई ऐसा सामान वग़ैरा है जिसे फ़रोख़्त कर के कुरबानी का इन्तिज़ाम कर सकें तो अब कुरबानी के बदले इन पर दस रोज़े वाजिब होंगे। तीन रोज़े हज़ के महीनों में या'नी यकुम शव्वालुल मुकर्रम से नवीं जुल हिज्जतिल हराम तक एहराम बांधने के बा'द इस बीच में जब चाहें रख लें। तरतीब वार रखना ज़रूरी नहीं, नागा कर के भी रख सकते हैं। बेहतर येह है कि सात, आठ और नवीं जुल हिज्जतिल हराम को रखें और फिर तेरह जुल हिज्जतिल हराम के बा'द बक़िय्या सात रोज़े जब चाहें रख सकते हैं बेहतर येह है कि घर जा कर रखें।



फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَّمَ اللَّهُ شَعَالَ عَنِيهِ وَاللَّيْلُ وَسَمْتُمْ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

वोह रोज़ा नहीं है बल्कि नफ़ल ही है। (دُرِّمُخْتَار ج ۳ ص ۳۹۳)

16 आप ने यह गुमान कर के रोज़ा रखा कि मेरे ज़िम्मे रोज़े की क़ज़ा है, अब रखने के बा'द मा'लूम हुवा कि गुमान ग़लत था। अगर फ़ौरन तोड़ दें तो कोई हरज नहीं, अलबत्ता बेहतर येही है कि पूरा कर लें। अगर मा'लूम होने के फ़ौरन बा'द न तोड़ा तो अब लाज़िम हो गया इसे नहीं तोड़ सकते अगर तोड़ेंगे तो क़ज़ा वाजिब है। (رَدُّ الْمُحْتَار ج ۳ ص ۳۹۹)

17 रात में आप ने क़ज़ा रोज़े की निय्यत की, अगर अब सुबह शुरूअ हो जाने के बा'द इसे नफ़ल करना चाहते हैं तो नहीं कर सकते। (اَيْضًا ص ۳۹۸)

18 दौराने नमाज़ भी अगर रोज़े की निय्यत की तो यह निय्यत सहीह है। (دُرِّمُخْتَار وَرَدُّ الْمُحْتَار ج ۳ ص ۳۹۸)

19 कई रोज़े क़ज़ा हों तो निय्यत में येह होना चाहिये कि उस रमज़ान के पहले रोज़े की क़ज़ा, दूसरे की क़ज़ा और अगर कुछ इस साल के क़ज़ा हो गए कुछ पिछले साल के बाकी हैं तो येह निय्यत होनी चाहिये कि इस रमज़ान की क़ज़ा और उस रमज़ान की क़ज़ा और अगर दिन और साल को मुअय्यन (या'नी Fix) न किया, जब भी हो जाएंगे। (عَالِمِغْرَبِي ج ۱ ص ۱۹۶)

20 مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ आप ने रमज़ान का रोज़ा रख लेने के बा'द क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) तोड़ डाला था तो आप पर इस रोज़े की क़ज़ा भी है और (अगर कफ़ारे की शराइत पाई गई तो) साठ रोज़े कफ़ारे के भी। अब आप ने इक्सठ रोज़े रख लिये क़ज़ा का



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

दिन मुअय्यन (Fix) न किया तो इस में क़ज़ा और कफ़़ारा दोनों अदा हो गए। (ایضاً)

दाढ़ी वाली बच्ची ! : रोज़ा और दीगर आ'माल की निय्यतें सीखने का जज़्बा बेदार करने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और दोनों ज़हानों की बरकतें हासिल कीजिये। आप की तरगीब के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक खुश गवार व खुशबूदार "मदनी बहार" आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्वे एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि एक बार आशिक़ाने रसूल के तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में एक तक़ीबन 26 सालह इस्लामी भाई भी शरीके सफ़र थे, वोह दुआ में बहुत गिर्या व ज़ारी करते थे। इस्तफ़सार (या'नी पूछने) पर बताया कि मेरी एक ही मदनी मुन्नी है और उस के चेहरे पर दाढ़ी के बाल उगने शुरूअ़ हो गए हैं ! इस की वज्ह से मुझे सख़्त तश्वीश है, एक्सरे और टेस्ट वगैरा से सबब सामने नहीं आ रहा और कोई भी इलाज कारगर नहीं हो पा रहा। उन की दरख़्वास्त पर शुरकाए मदनी क़ाफ़िला ने उन की मदनी मुन्नी के लिये दुआ की। सफ़र मुकम्मल हो जाने के बा'द जब दूसरे दिन उस दुख्यारे इस्लामी भाई से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने ने मसरत से झूमते हुए येह खुश ख़बरी सुनाई कि बच्ची की अम्मी ने बताया कि आप के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना होने के दूसरे ही दिन الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَيْهِ सैरत अंगेज़ तौर पर मदनी मुन्नी के चेहरे से बाल ऐसे गाइब हुए हैं जैसे कभी थे ही नहीं !



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाइस है। (ابو يعلى)

सहरी करना सुन्नत है : अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़तِ عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एहसान कि उस ने हमें रोज़े जैसी अज़ीमुश्शान ने'मत इनायत फ़रमाई और साथ ही कुव्वत के लिये सहरी की न सिर्फ़ इजाज़त महमंमत फ़रमाई, बल्कि इस में हमारे लिये ढेरों सवाबे आख़िरत भी रख दिया।

बा'ज लोगों को देखा गया है कि कभी सहरी करने से रह जाते हैं तो फ़ख़्रिया यूँ कहते सुनाई देते हैं : "हम ने तो आज बिगैर सहरी के रोज़ा रखा है !" मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दीवानो ! येह फ़ख़्र का मौक़अ हरगिज़ नहीं, सहरी की सुन्नत छूटने पर तो अफ़सोस होना चाहिये कि अफ़सोस ! ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की एक अज़ीम सुन्नत छूट गई।

हज़ार साल की इबादत से बेहतर : हज़रते सय्यिदुना शैख़ शरफ़ुद्दीन अल मा'रूफ़ बाबा बुलबुल शाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : "अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त ने मुझे अपनी रहमंमत से इतनी ताक़त बख़्शी है कि मैं बिगैर खाए पिये और बिगैर साजो सामान के भी अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सकता हूँ। मगर चूँकि येह उमूर हुजूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत नहीं हैं, इस लिये मैं इन से बचता हूँ, मेरे नज़दीक सुन्नत की पैरवी हज़ार साल की (नफ़ल) इबादत से बेहतर है।" बहर हाल तमाम तर आ'माल का हुस्नो जमाल इत्तिबाए सुन्नते महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में पिन्हां है।

सोने के बा'द सहरी की इजाज़त न थी : इब्तिदाअन रोज़ा रखने वाले को गुरुबे आफ़ताब के बा'द सिर्फ़ उस वक्त तक खाने पीने की इजाज़त थी जब तक वोह सो न जाए, अगर सो गया तो अब बेदार



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : على الله تعالى عليه واليه راجع : जिस के पास मेरा जिफ़्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्ज़ूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

हो कर खाना पीना मम्नूअ़ था। मगर रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे बन्दों पर एहसाने अज़ीम फ़रमाते हुए सहरी की इजाज़त मर्हमत फ़रमा दी, इस का सबब बयान करते हुए ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी नक्ल करते हैं :

सहरी की इजाज़त की हिकायत : हज़रते सय्यिदुना सरमा बिन कैस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मेहनती शख्स थे। एक दिन ब हालते रोज़ा अपनी ज़मीन में दिन भर काम कर के शाम को घर आए। अपनी ज़ौजए मोहतरमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से खाना त़लब किया, वोह पकाने में मसरूफ़ हुई। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ थके हुए थे, आंख लग गई। खाना तय्यार कर के जब आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को जगाया गया तो आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने खाने से इन्कार कर दिया। क्यूं कि उन दिनों (गुरुबे आफ़ताब के बा'द) सो जाने वाले के लिये खाना पीना मम्नूअ़ हो जाता था। चुनान्वे खाए पिये बिगैर आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दूसरे दिन भी रोज़ा रख लिया। आप (تفسير خازن ج ١ ص ١٢٦) कमज़ोरी के सबब बेहोश हो गए। तो उन के हक़ में येह आयते मुक़द्दसा नाज़िल हुई :

وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ
الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ
ثُمَّ أَسْوَأِ الصَّيَامِ إِلَى الْعِلاَةِ (٢٦٠ البقرة: ١٨٧)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और खाओ और पियो यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा सियाही के डोरे से पौ फट कर। फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो।

इस आयते मुक़द्दसा में रात को सियाह डोरे से और सुब्हे



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तशबीह दी गई। मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये रमज़ानुल मुबारक की रातों में खाना पीना मुबाह (या'नी जाइज़) करार दे दिया गया है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 62 ब तसर्फ़)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से येह भी मा'लूम हुवा कि रोज़े का अज़ाने फ़ज़्र से कोई तअल्लुक नहीं या'नी फ़ज़्र की अज़ान के दौरान खाने पीने का कोई जवाज़ ही नहीं। अज़ान हो या न हो, आप तक आवाज़ पहुंचे या न पहुंचे सुब्हे सादिक़ से पहले पहले आप को खाना पीना बन्द करना होगा।

“शुब्हत” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से

3 सहरी के मुतअल्लिक़ 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

1) रोज़ा रखने के लिये सहरी खा कर कुव्वत हासिल करो और दिन (या'नी दो पहर) के वक्त आराम (या'नी कैलूला) कर के रात की इबादत के लिये ताक़त हासिल करो। (अिन माज़े ज २ व ३२१ हदीथ १६९३)

2) तीन आदमी जितना भी खा लें उन से कोई हिसाब न होगा बशर्ते कि खाना हलाल हो (1) रोज़ादार इफ़्तार के वक्त (2) सहरी खाने वाला (3) मुजाहिद, जो अल्लाह ए़ज़्ज़ल के रास्ते में सरहदे इस्लाम की हिफ़ाज़त करे। (मैजम क़िबिर ज ११ व २८० हदीथ १२०१२)

3) सहरी पूरी की पूरी बरकत है पस तुम न छोड़ो चाहे येही हो कि तुम पानी का एक घूंट पी लो। बेशक अल्लाह ए़ज़्ज़ल और उस के फ़िरिशते रहमत



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह पाक के ज़िक्र और नबी पर दुरुद शरीफ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الايمان)

भेजते हैं सहरी करने वालों पर । (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ٤ ص ٨٨ حديث ١١٣٩٦)

क्या रोज़े के लिये सहरी शर्त है ? : सहरी रोज़े के लिये शर्त नहीं, सहरी के बिगैर भी रोज़ा हो सकता है मगर जान बूझ कर सहरी न करना मुनासिब नहीं कि एक अज़ीम सुन्नत से महरूमि है और सहरी में ख़ूब डट कर खाना ही ज़रूरी नहीं, चन्द खजूरें और पानी ही अगर ब निथ्यते सहरी इस्ति'माल कर लें जब भी काफी है ।

खजूर और पानी से सहरी : हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ताजदार मदीना, सुरुरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहरी के वक्त मुझ से फ़रमाया : “मेरा रोज़ा रखने का इरादा है मुझे कुछ खिलाओ ।” तो मैं ने कुछ खजूरें और एक बरतन में पानी पेश किया । (السُّنَنُ الْكُبْرَى لِلنَّسَائِيِّ ج ٢ ص ٨٠ حديث ٢٤٧٧)

खजूर से सहरी करना सुन्नत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़ादार के लिये एक तो सहरी करना बजाते खुद सुन्नत और खजूर से सहरी करना दूसरी सुन्नत, क्यूं कि अल्लाह तआला के हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खजूर से सहरी करने की तरगीब दी है । चुनान्वे सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, अल्लाह के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “نَعْمَ السَّحُورُ التَّمْرُ.”

(مُعْجَمُ كَبِير ج ٧ ص ١٥٩ حديث ٦٦٨٩)

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : “نَعْمَ سَحُورُ الْمُؤْمِنِ التَّمْرُ.” या'नी खजूर मोमिन की क्या ही अच्छी सहरी है ।”

(ابوداؤد ج ٢ ص ٤٤٣ حديث ٢٣٤٥)

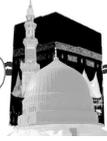


फरमाने मुस्तफा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे । (جمع الجوامع)

सहरी का वक्त कब होता है ? : हनफिय्यों के बहुत बड़े आलिम हजरते अल्लामा मौलाना अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي فَرَمَاتे हैं : “बा’जों के नज़्दीक सहरी का वक्त आधी रात से शुरूअ हो जाता है ।”
(مِرْقَاتُ الْمَفَاتِيحِ ج ٤ ص ٤٧٧)

सहरी में ताख़ीर अफ़ज़ल है जैसा कि हजरते सय्यिदुना या’ला बिन मुरह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार महबूब عَزَّوَجَلَّ ने फरमाया : “तीन चीजों को अल्लाह महबूब रखता है (1) इफ़्तार में जल्दी और (2) सहरी में ताख़ीर और (3) नमाज़ (के कियाम) में हाथ पर हाथ रखना ।”
(مَعْجَمُ أَوْسَطِ ج ٥ ص ٣٢٠ حَدِيثُ ٧٤٧)

सहरी में ताख़ीर से कौन सा वक्त मुराद है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सहरी में ताख़ीर करना मुस्तहब है मगर इतनी ताख़ीर भी न की जाए कि सुबहे सादिक़ का शुबा होने लगे ! यहां ज़ेहन में येह सुवाल पैदा होता है कि “ताख़ीर” से मुराद कौन सा वक्त है ? मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ में फरमाते हैं : “इस से मुराद रात का छटा हिस्सा है ।” फिर सुवाल ज़ेहन में उभरा कि रात का छटा हिस्सा कैसे मा’लूम किया जाए ? इस का जवाब येह है कि गुरुबे आफ़ताब से ले कर सुबहे सादिक़ तक रात कहलाती है । मसलन किसी दिन सात बजे शाम को सूरज गुरुब हुवा और फिर चार बजे सुबहे सादिक़ हुई । इस तरह गुरुबे आफ़ताब से ले कर सुबहे सादिक़ तक जो नव घन्टे का वक्फ़ा गुज़रा वोह रात कहलाया । अब रात के इन नव घन्टों के बराबर बराबर छ⁶ हिस्से कर दीजिये । हर हिस्सा डेढ़ घन्टे का हुवा,



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह पाक तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

अब रात के आखिरी डेढ़ घन्टे (या'नी अढ़ाई बजे ता चार बजे) के दौरान सुब्हे सादिक़ से पहले पहले सहरी करना ताख़ीर से करना हुवा। सहरी व इफ़तार का वक्त रोज़ाना बदलता रहता है। बयान किये हुए तरीके के मुताबिक़ जब चाहें रात का छटा हिस्सा निकाल सकते हैं। अगर रात सहरी कर ली और रोज़े की नियत भी कर ली। तब भी बक़िय्या रात के दौरान खा पी सकते हैं, नई नियत की हाजत नहीं।

अज़ाने फ़ज़्र नमाज़ के लिये है न कि रोज़ा बन्द करने के लिये ! : बा'ज़ लोग सुब्हे सादिक़ के बा'द फ़ज़्र की अज़ान के दौरान खाते पीते रहते हैं, और बा'ज़ कान लगा कर सुनते हैं कि अभी फुलां मस्जिद की अज़ान ख़त्म नहीं हुई या कहते हैं : वोह सुनो ! दूर से अज़ान की आवाज़ आ रही है ! और यूं कुछ न कुछ खा लेते हैं। अगर खाते नहीं तो पानी पी कर अपनी इस्तिलाह में "रोज़ा बन्द" करते हैं। आह ! इस तरह "रोज़ा बन्द" तो क्या करेंगे रोज़े को बिल्कुल ही "खुला" छोड़ देते हैं और यूं सुब्हे सादिक़ के बा'द खा या पी लेने के सबब उन का रोज़ा होता ही नहीं, और सारा दिन भूक प्यास के सिवा कुछ उन के हाथ आता ही नहीं। "रोज़ा बन्द" करने का तअल्लुक़ अज़ाने फ़ज़्र से नहीं सुब्हे सादिक़ से पहले पहले खाना पीना बन्द करना ज़रूरी है, जैसा कि आयते मुक़द्दसा के तहत गुज़रा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर मुसलमान को अक्ले सलीम अता फ़रमाए और सहीह अवकात की मा'लूमात कर के रोज़ा नमाज़ वगैरा इबादात दुरुस्त बजा लाने की तौफ़ीक़ महमत फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरुदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगिफ़रत है। (ابن عساکر)

खाना पीना बन्द कर दीजिये : इल्मे दीन से दूरी के सबब आज कल काफ़ी लोग अज़ान या साइरन ही पर सहरी व इफ़तार का दारो मदार रखते हैं बल्कि बा'ज तो अज़ाने फ़ज़ के दौरान ही "रोज़ा बन्द" करते हैं। इस अ़ाम ग़लती को दूर करने के लिये क्या ही अच्छा हो कि रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना सुबहे सादिक् से तीन मिनट पहले हर मस्जिद में बुलन्द आवाज़ से صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ! صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! कहने के बा'द इस तरह तीन बार ए'लान कर दिया जाए : "अशिक़ाने रसूल मुतवज्जेह हों, आज सहरी का आख़िरी वक्त (मसलन) चार बज कर बारह मिनट है, वक्त ख़त्म हो रहा है, फ़ौरन खाना पीना बन्द कर दीजिये, अज़ान का हरगिज़ इन्तिज़ार न फ़रमाइये, अज़ान सहरी का वक्त ख़त्म हो जाने के बा'द नमाज़े फ़ज़ के लिये दी जाती है।"

हर एक को येह बात ज़ेहन नशीन करनी ज़रूरी है कि अज़ाने फ़ज़ सुबहे सादिक् के बा'द ही देनी होती है और वोह "रोज़ा बन्द" करने के लिये नहीं बल्कि सिर्फ़ नमाज़े फ़ज़ के लिये दी जाती है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मदनी क़ाफ़िले की निख्यत करते ही मुशिकल आसान हो गई ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में अशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फरमाते रहिये إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह पाक के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुदरि से उठे । (شعب الایمان)

हाथ आएंगी । आप की जौक अफ़ज़ाई के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक “मदनी बहार” गोश गुज़ार करता हूं, चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बड़े भाई की शादी के दिन करीब आ रहे थे, अख़्ताजात का इन्तिज़ाम नहीं था, उन्हें सख़्त तश्वीश थी, क़र्ज़ लेने का ज़ेहन भी नहीं बन रहा था कि अदा करने में ताख़ीर की सूरत में जान से प्यारी मदनी तहरीक, “दा'वते इस्लामी” के नाम पर बट्टा लग सकता है । एक दिन इन्तिहाई परेशानी के आलम में उन्होंने ने नमाज़े ज़ोहर अदा की और दिल ही दिल में निय्यत की, कि अगर रक़म का इन्तिज़ाम हो गया तो मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआदत हासिल करूंगा । नमाज़ से फ़राग़त के बा'द अभी नमाज़ियों से मुलाक़ात और इन्फ़िरादी कोशिश में मसरूफ़ थे कि इमाम साहिब जो रिश्ते में उन के तायाजान थे और उन की परेशानी से वाकिफ़ भी । उन्होंने ने इन्हें बुलाया और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﷻ बिगैर सुवाल के खुद ही रक़म देने का वा'दा फ़रमा लिया । वोह इस्लामी भाई दूसरे ही दिन मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﷻ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की बरकत से उन की उल्झन दूर हो गई । तारीख़ तै होते वक्त बारे क़र्ज़ तले दबे हुए थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﷻ बड़े भाईजान की शादी भी हो गई और क़र्ज़ भी उतर गया ।

क़ल्ब भी शाद हो, घर भी आबाद हो शादियां भी रचें, क़ाफ़िले में चलो
क़र्ज़ उतर जाएगा, ख़ूब रिज़क़ आएगा सब बलाएं टलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझे पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े कियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

मदीनतुल
मुनव्वरह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! छोटे भाई की मदनी काफ़िले में सफ़र की निय्यत की बरकत से अदाए कर्ज़ का इन्तिज़ाम, रक़म का एहतियाम और बड़े भाई की शादी वाला काम हो गया।

मक्कतुल
मुकर्रमा

कर्ज़ से नजात का अमल : हर नमाज़ के बा'द सात बार सूरए कुरैश (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दुआ मांगिये। पहाड़ जितना कर्ज़ होगा तब भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** अदा हो जाएगा। अमल ता हुसूले मुराद जारी रखिये।

जन्नतुल
बकीअ

कर्जा उतारने का वज़ीफ़ा : **اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ : وَأَعِزَّنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ** (तरजमा : या अल्लाह ! मुझे हलाल रिज़क अता फ़रमा कर हराम से बचा और अपने फज़लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे) ता हुसूले मुराद हर नमाज़ के बा'द 11, 11 बार और सुब्हो शाम 100, 100 बार रोज़ाना (अव्वल व आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़िये। मरवी हुवा कि एक मुकातब¹ ने हज़रते मौलाए

मदीनतुल
मुनव्वरह

काएनात, अलिय्युल मुर्तजा शोरे खुदा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ** की बारगाह में अर्ज़ की : “मैं अपनी किताबत (या'नी आज़ादी की कीमत) अदा करने से

मक्कतुल
मुकर्रमा

अज़िज़ हूँ मेरी मदद फ़रमाइये।” आप **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ** ने फ़रमाया : मैं तुम्हें चन्द कलिमात न सिखाऊँ जो **रसूलुल्लाह** **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने मुझे सिखाए हैं, अगर तुम पर जबले सीर² जितना दैन (या'नी कर्ज़) होगा तो **अल्लाह तआला** तुम्हारी तरफ़ से अदा कर देगा, तुम यूँ कहा

जन्नतुल
बकीअ

لَدَيْهِ

1 : मुकातब : उस गुलाम को कहते हैं जिस ने अपने आका से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआहदा किया हुवा हो। (جُزْءُهُ ج ٢ ص ٤٢ اَمْلَحْصًا)

2 : सीर एक पहाड़ का नाम है। (الْأَنْهَاءُ ج ٣ ص ٦١)

जन्नतुल
बकीअमक्कतुल
मुकर्रमाजन्नतुल
बकीअमदीनतुल
मुनव्वरहमक्कतुल
मुकर्रमाजन्नतुल
बकीअ



फरमाने मुस्त्फा عَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالصَّلَامُ : बरोजे कियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझे पर ज़ियादा दुरुदे पाक पढ़े होंगे। (तर्मिज़ी)

करो : **اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ** :

(तरजमा : या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! मुझे हलाल रिज़्क अता फ़रमा कर हराम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे)

(तर्मिज़ी ज ०५, ३२९, ३०७६ हदीथ)

सुब्ह व शाम की ता'रीफ़ : आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमकने तक **सुब्ह** और इब्तिदाए वक्ते जोहर से गुरुबे आफ़ताब तक **शाम** कहलाती है।

मदनी मश्वरा : परेशान हाल इस्लामी भाई को चाहिये कि दा'वते **इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी काफ़िले में **अशिकाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के वहां दुआ मांगे, अगर खुद मजबूर है मसलन इस्लामी बहन है तो अपने घर में से किसी और को सफ़र पर भिजवाए।

इफ़्तार का बयान : जब गुरुबे आफ़ताब का यकीन हो जाए, इफ़्तार करने में देर नहीं करनी चाहिये, न साइरन का इन्तिज़ार कीजिये न अज़ान का, फ़ौरन कोई चीज़ खा या पी लीजिये मगर **खजूर** या छुहारा या पानी से इफ़्तार करना सुन्नत है। “फ़तावा रज़विख्या” में है, **सुवाल** : रोज़ा इफ़्तार करना किस चीज़ से मस्नून (सुन्नत) है। **जवाब** : खुरमाए तर (या'नी खजूर) और न हो तो खुश्क (या'नी छुहारा) और न हो तो पानी।

(फ़तावा रज़विख्या मुखर्ज़ा, जि. 10, स. 628, 629)

इफ़्तार की दुआ : इफ़्तार कर लेने के बा'द मसलन खजूर खा कर या थोड़ा सा पानी पी लेने के बा'द सुन्नत पर अमल करने की निय्यत



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह पाक उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता है और कीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

4 "जो रोज़ादार को पानी पिलाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मेरे हौज से पिलाएगा कि जन्नत में दाख़िल होने तक प्यासा न होगा।"

(ابن خزيمة ج 3 ص 192 حديث 1887)

5 "जब तुम में कोई रोज़ा इफ़तार करे तो खजूर या छुहारे से इफ़तार करे कि वोह बरकत है और अगर न मिले तो पानी से कि वोह पाक करने वाला है।"

(ترمذی ج 2 ص 162 حديث 690)

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इफ़तार : हज़रते सय्यिदुना

अनस رضي الله تعالى عنه से रिवायत है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नमाज़ से पहले तर खजूरों से रोज़ा इफ़तार फ़रमाते, तर खजूरें न होतीं तो चन्द खुश्क खजूरें या'नी छुहारों से और येह भी न होतीं तो चन्द चुल्लू पानी पीते।" (ابوداؤد ج 2 ص 447 حديث 2306)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहादीसे मुबारका में सहरी और इफ़तार में खजूर के इस्ति'माल की तरगीब मौजूद है, बेशक खजूर में ला ता'दाद बरकतें और कई बीमारियों का इलाज है।

"सय्यिदी आ'ला हज़रत की पच्चीसवीं शरीफ़" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्वत से खजूर के 25 मदीनी फूल

1 अल्लाह के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सिह्हत निशान है : "अलिया" (या'नी मदीनए मुनव्वरह



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

مِنْ زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में मस्जिदे कुबा शरीफ़ की जानिब एक जगह का नाम) की अज़्वा (मदीनए मुनव्वरह مِنْ زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की सब से अज़ीम खजूर का नाम) में हर बीमारी से शिफ़ा है।" एक रिवायत के मुताबिक़ "सात रोज़ तक रोज़ाना सात अज़्वा खजूरें खाना जुज़ाम (या'नी कोढ़) में नफ़अ देता है।" (الكامل لابن عدی ج ۷ ص ۴۰۷)

﴿2﴾ मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : अज़्वा खजूर जन्नत से है, इस में ज़हर से शिफ़ा है। (ترمذی ص ۴ احديث ۲۰۷۳) बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत के मुताबिक़ जिस ने नहार मुंह अज़्वा खजूर के सात दाने खा लिये उस दिन उसे जादू और ज़हर भी नुक़सान न दे सकेंगे।

(بخاری ج ۳ ص ۵۴۰ حدیث ۵۴۴۵)

﴿3﴾ सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, खजूर खाने से कूलन्ज (या'नी बड़ी अंतड़ी का दर्द) नहीं होता।

(كَنْزُ الْعَمَالِ ج ۱۰ ص ۱۲ احديث ۲۸۱۹۱)

﴿4﴾ तबीबों के तबीब, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सिहहत निशान है : "नहार मुंह खजूर खाओ इस से पेट के कीड़े मर जाते हैं।"

(الْجَامِعُ الصَّغِيرُ ص ۳۹۸ حدیث ۶۳۹۴)

﴿5﴾ हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खुसैम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "मेरे नज़्दीक हामिला के लिये खजूर से और मरीज़ के लिये शहद से बेहतर किसी चीज़ में शिफ़ा नहीं।" (تفسير الدر المنثور ج ۵ ص ۵۰۰)



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरुद पढ़ना बरोजे कियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (फ़रदुस़ الاخबार)

6) सय्यिदी मुहम्मद अहमद ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ فَرَمَاتे हैं :
“हामिला को खजूरें खिलाने से إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ लड़का पैदा होगा जो कि खूब सूरत बुर्दबार और नर्म मिजाज होगा।”

7) जो फ़ाके (या'नी भूक) की वजह से कमज़ोर हो गया हो उस के लिये खजूर बहुत मुफ़ीद है क्यूं कि येह ग़िज़ाइयत से भरपूर है इस के खाने से जल्द तुवानाई बहाल हो जाती है, लिहाज़ा खजूर से इफ़्तार करने में येह हिक्मत भी है।

8) रोज़े में फ़ौरन बर्फ़ का ठन्डा पानी पी लेने से गेस, तबखीरे मे'दा और जिगर के वरम का सख़्त ख़तरा है, खजूर खा कर ठन्डा पानी पीने से नुक्सान का ख़तरा टल जाता है, मगर सख़्त ठन्डा पानी हरगिज़ नहीं पीना चाहिये।

9) खजूर और ककड़ी¹, नीज़ खजूर और तरबूज़ एक साथ खाना नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से साबित है।² इस में भी हिक्मतों के मदनी फूल हैं। तबीबों का कहना है कि इस से जिन्सी व जिस्मानी कमज़ोरी और दुबला पन दूर होता है। मख़खन के साथ खजूर खाना भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से साबित है।
(ابن ماجه 4 ج ص 41 حديث 233)

10) खजूर खाने से पुरानी कब्ज़ दूर होती है।

11) दमे, दिल, गुर्दे, मसाने, पित्ते और आंतां के अमराज में

دینه

1. مسلم من 1120 حديث 2043. 2. شمالي ترمذی من 1211 حديث 190



फरमाने मुस्तफा ﷺ : شَبَّهَ الْجُمُوعَ وَالرَّجُلَ الَّذِي يَمُوتُ فِيهَا مُضًى عَلَى كَسْرَتِهِ مِنْ دُرُّودٍ
पढो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

खजूर मुफ़ीद है। येह बलगम ख़ारिज करती, मुंह की खुशकी दूर करती और पेशाब आवर है।

﴿12﴾ दिल की बीमारी और काला मोतिया के लिये खजूर गुठली समेत कूट कर खाना मुफ़ीद है।

﴿13﴾ खजूर भिगो कर इस का पानी पी लेने से जिगर की बीमारियां दूर होती हैं। दस्त की बीमारी में भी येह पानी मुफ़ीद है। (रात को भिगो कर सुब्ह नहार मुंह इस का पानी पियें मगर भिगोने के लिये पानी डाल कर फ़ीज़र में न रखें)

﴿14﴾ खजूर दूध में उबाल कर खाना बेहतरिन मुक़व्वी (या'नी ताक़त देने वाली) ग़िज़ा है, येह ग़िज़ा बीमारी के बा'द की कमजोरी दूर करने के लिये बेहद मुफ़ीद है।

﴿15﴾ खजूर खाने से ज़ख़म जल्दी भरता है।

﴿16﴾ यरक़ान (या'नी पीलिया) के लिये खजूर बेहतरिन दवा है।

﴿17﴾ ताज़ा पक्की खजूरें सफ़रा (या'नी "पित" जिस से कै के ज़रीए कड़वा पानी निकलता है) और तेज़ाबियत को ख़त्म करती हैं।

﴿18﴾ खजूर की गुठलियां आग में जला कर उस का मन्जन बना लीजिये, येह दांत चमकदार और मुंह की बदबू दूर करता है।

﴿19﴾ खजूर की जली हुई गुठलियों की राख लगाने से ज़ख़म का खून बन्द होता और ज़ख़म भर जाता है।

﴿20﴾ खजूर की गुठलियों को आग में डाल कर धूनी लेने से बवासीर के मससे खुशक हो जाते हैं।



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

﴿21﴾ खजूर के दरख्त की जड़ों या पत्तों की राख से मन्जन करना दांतों के दर्द के लिये मुफ़ीद है, जड़ों या पत्तों को पानी में उबाल कर उस से कुल्लियां करना भी दांतों के दर्द में फ़ाएदे मन्द है।

﴿22﴾ जिसे खजूर खाने से किसी किस्म का नुक़सान (side effect) होता हो वोह अनार के रस या ख़श्खाश या काली मिर्च के साथ इस्ति'माल करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** फ़ाएदा होगा।

﴿23﴾ अथ पक्की और पुरानी खजूरें बयक वक्त (या'नी एक ही वक्त में) खाना नुक़सान देह है।

इसी तरह खजूर के साथ अंगूर या किशमिश या मुनक्का मिला कर खाना, खजूर और इन्जीर बयक वक्त खाना, बीमारी से उठते ही कमजोरी में ज़ियादा खजूरें खाना और आंखों की बीमारी में खजूरें खाना मुज़िर या'नी नुक़सान देह है।

﴿24﴾ एक वक्त में 5 तोला (या'नी 58.32 ग्राम) से ज़ियादा खजूरें न खाएं। पुरानी खजूर खाते वक्त खोल कर अन्दर से देख लीजिये क्यूं कि उस में बा'ज अवकात सुरसुरियां (या'नी छोटे छोटे लाल कीड़े) होती हैं, लिहाज़ा साफ़ कर के खाइये। जिस खजूर में कीड़े होने का गुमान हो उसे साफ़ किये बिगैर खाना मक्रूह है। बेचने वाले चमकाने के लिये अक्सर सरसों का तेल लगा देते हैं लिहाज़ा बेहतर येह है कि खजूरें चन्द मिनट के लिये पानी में भिगो दीजिये ताकि मख़िख़रियों की बीट और मैल कुचैल वगैरा छूट जाए फिर धो



फरमाने मुस्तफा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिन्न हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (त्रुमदी)

कर इस्ति'माल फ़रमाइये । दरख्त की पकी हुई खजूरें ज़ियादा मुफ़ीद होती हैं । (मगर धोए बिगैर खजूरें बल्कि कोई सा फल और सब्जी वगैरा इस्ति'माल न करें वरना गर्दों गुबार, मखिख्यों, कीड़े मकोड़ों की बीट और जरासीम कुश दवाओं के असरात पेट में जा कर बीमारियों का बाइस हो सकते हैं)

﴿25﴾ मदीनए मुनव्वरह رَاذَهَا اللّٰهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا की खजूरों की गुठलियां मत फेंकिये, किसी अदब की जगह डाल दीजिये या दरिया बुर्द फ़रमा दीजिये, बल्कि हो सके तो सरोते से बारीक टुकड़ियां कर के या पीस कर डिबिया में डाल कर जेब में रख लीजिये और छालिया की जगह इस्ति'माल कर के इस की बरकतें लूटिये । कोई चीज़ ख़्वाह दुन्या के किसी भी ख़ित्ते की हो जब मदीनए मुनव्वरह رَاذَهَا اللّٰهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا की फ़जाओं में दाख़िल हुई तो मदीने की हो गई लिहाज़ा आशिक़ाने रसूल उस का अदब करते हैं ।

क्या हदीस में बताया हुआ इलाज हर एक कर सकता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा “खजूर के 25 मदीनी फूल” में मुख़्तलिफ़ अमराज़ में “खजूर” के ज़रीए इलाज तज्वीज़ किया गया है, इस सिल्लिसले में आयिन्दा सुतूर का बग़ौर मुतालआ إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ नफ़अ बख़्श पाएंगे । चुनान्वे (हदीसे पाक : “ فِي الْحَبَّةِ السُّودَاءِ شِفَاءٌ مِّنْ كُلِّ دَاءٍ إِلَّا السَّامَ ” या'नी काला दाना (कलोंजी) में मौत के सिवा हर बीमारी से शिफ़ा है” के तहूत) मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पदो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मरिफ़रत है। (ابن عساکر)

अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ फ़रमाते हैं : हर मरज़ (में शिफ़ा) से मुराद हर बल्ग़मी और रतूबत के अमराज़ में (शिफ़ा है), क्यूं कि कलोज़ी गर्म और खुश्क होती है लिहाज़ा मरतूब (या'नी तरी वाली) और सरदी की बीमारियों में मुफ़ीद होगी। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : यहां मुराद अरब की अ़ाम बीमारियां हैं (مرقات) या'नी कलोज़ी अरब की अ़ाम बीमारियों में मुफ़ीद है। ख़याल रहे कि अह़दीसे शरीफ़ा की दवाएं किसी हज़िक् तबीब (या'नी माहिर तबीब) की राय से इस्ति'माल करनी चाहिएं (अहले अरब को तज्वीज़ कर्दा दवाएं) सिर्फ़ (अपनी) राय से इस्ति'माल न करें कि हमारे (तब्द) मिज़ाज अहले अरब के (तब्द) मिज़ाज से जुदागाना हैं। (मिरआत, जि. 6, स. 216, 217) साथ ही येह भी ख़ास ताकीद है कि इस किताब में दिया हुवा कोई भी नुस्खा अपने तबीब से मश्वरा किये बिगैर इस्ति'माल न किया जाए अगर्चे येह नुस्खा उसी बीमारी के लिये हो जिस से आप दोचार हों। याद रहे! लोगों की तब्द कैफ़िय्यात जुदा जुदा होती हैं, बसा अवकात एक ही दवा किसी के लिये शिफ़ा व आराम का बाइस बनती है तो किसी के लिये मौत का पयाम लाती है। लिहाज़ा आप की जिस्मानी कैफ़िय्यात से वाक़िफ़ आप का मख़सूस तबीब ही येह तै कर सकता है कि आप को कौन सा नुस्खा मुवाफ़िक् आ सकता है और कौन सा नहीं।

इफ़्तार के वक्त दुआ क़बूल होती है : दो फ़रामीने मुस्तफ़ा

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : (1) “बेशक रोज़ादार के लिये इफ़्तार के वक्त एक



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरुदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)। (ابن بشكوال)

ऐसी दुआ होती है जो रद नहीं की जाती।” (ابن ماجه 2 ج 200 ص 1703 حديث)

(2) “तीन शख़्सों की दुआ रद नहीं की जाती ﴿1﴾ बादशाहे आदिल की और ﴿2﴾ रोज़ादार की ब वक्ते इफ़तार और ﴿3﴾ मज़्लूम की। इन तीनों की दुआ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बादलों से भी ऊपर उठा लेता है और आस्मान के दरवाजे उस के लिये खुल जाते हैं और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है : “मुझे मेरी इज़्जत की क़सम ! मैं तेरी ज़रूर मदद फ़रमाऊंगा अगर्चे कुछ देर बा'द।”

(أيضاً ص 349 حديث 1702)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हम खाने पीने में रह जाते हैं : प्यारे रोज़ादारो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ इफ़तार के वक्त दुआ क़बूल होती है, आह ! इस क़बूलियत की घड़ी में हमारा नफ़्स इस मौक़अ पर सख़्त आज़माइश में पड़ जाता है। क्यूं कि इस वक्त अक्सर हमारे आगे अन्वाओ अक्साम के फलों, कबाब, समोसों, पकोड़ों के साथ साथ गरमी का मौसिम हो तो ठन्डे ठन्डे शरबत के जाम भी मौजूद होते हैं, इधर सूरज गुरूब हुवा, उधर खानों और शरबतों पर हम ऐसे टूट पड़ते हैं कि दुआ याद ही नहीं रहती ! दुआ तो दुआ हमारे कुछ इस्लामी भाई इफ़तार के दौरान खाने पीने में इस क़दर मशगूल हो जाते हैं कि उन को नमाज़े मगरिब की पूरी जमाअत तक नहीं मिलती, बल्कि مَعَاذَ اللّٰهِ बा'ज तो इस क़दर सुस्ती करते हैं कि घर ही में इफ़तार कर के वहीं पर बिगैर जमाअत नमाज़ पढ़ लेते हैं। तौबा ! तौबा !!



फरमाने मुस्तफा ﷺ : बरोजे कियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर जियादा दुरूदे पाक पढे होंगे ! (ترمذی)

जन्त के तलब गारो ! इतनी भी गफ़लत मत कीजिये !! नमाजे बा जमाअत की शरीअत में निहायत सख़्त ताकीद आई है। याद रखिये ! बिला किसी सहीह शर्ई मजबूरी के मस्जिद की पन्ज वक्ता नमाज की पहली जमाअत तर्क कर देना गुनाह है।

गिज़ा से इफ़्तार के बा'द नमाज के लिये मुंह साफ़ करना ज़रूरी है : बेहतर येह है कि एकआध खजूर से इफ़्तार कर के फ़ौरन अच्छी तरह मुंह साफ़ कर ले और नमाजे बा जमाअत में शरीक हो जाए। आज कल मस्जिद में लोग फल पकोड़े वगैरा खाने के बा'द अच्छी तरह मुंह साफ़ नहीं करते यूं ही जमाअत में शरीक हो जाते हैं हालां कि गिज़ा का मा'मूली ज़रा या ज़ाएक़ा भी मुंह में नहीं होना चाहिये कि

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلِيٍّ وَرَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ फ़रमाते हैं : मुतअद्दिद अहादीस में इशाद हुवा है कि “जब बन्दा नमाज को खड़ा होता है फ़िरिशता उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो पढता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिशते के मुंह में जाता है उस वक्त अगर खाने की कोई शै उस के दांतों में होती है मलाएक़ा को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती।” हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले

मोहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई रात को नमाज के लिये खड़ा हो तो चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब वोह अपनी नमाज में क़िराअत करता है तो फ़िरिशता अपना मुंह इस के मुंह पर रख



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुझ पर एक मर्तबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

लेता है और जो चीज़ इस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिशते के मुंह में दाख़िल हो जाती है।¹ और “त़बरानी ने कबीर” में हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत की है कि दोनों फ़िरिशतों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरां नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता देखें और उस के दांतों में खाने के रेज़े फंसे हों। (مُعْجَمُ كَبِيرٍ ج ٤، ص ١٧٧، حَدِيثُ ٤٠٦١)।

फ़तावा रज़विख्या मुखर्रजा, जि. 1, स. 624 ता 625) मस्जिद में इफ़तार करने वालों के लिये अक्सर मुंह साफ़ करना दुश्वार होता है कि अच्छी तरह सफ़ाई करने बैठें तो जमाअत निकल जाने का अन्देशा होता है लिहाज़ा मश्वरा है कि सिर्फ़ एकआध खजूर खा कर पानी पी लें पानी को मुंह के अन्दर ख़ूब जुम्बिश दें या'नी हिलाएं ताकि खजूर की मिठास और उस के अज्ज़ा छूट कर पानी के साथ पेट में चले जाएं ज़रूरतन दांतों में ख़िलाल भी करें। अगर मुंह साफ़ करने का मौक़अ न मिलता हो तो आसानी इसी में है कि सिर्फ़ पानी से इफ़तार कर लीजिये। मुझे वोह रोज़ेदार बड़े प्यारे लगते हैं जो तरह तरह की ने'मतों के थालों से बे नियाज़ हो कर गुरुबे आफ़ताब से पहले पहले मस्जिद की पहली सफ़ में, पानी ले कर बैठ जाएं कि इस तरह इफ़तार से जल्दी फ़राग़त भी मिले, मुंह भी साफ़ रहे और पहली सफ़ में तकबीरे ऊला के साथ बा जमाअत नमाज़ भी नसीब हो जाए।

١ شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٢ ص ٣٨١ رقم ٢١١٧.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اِنَّا نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ



کُرآن شفاۓت کر کے جنت میں لے जाएगा

فَرمانے مُستَفَا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جس
شخس نے کُرآنِ پاک سِیخا اور سِیخاِیا
اور جو کُछ کُرآنِ پاک میں ہے उस पर اَمَل
کِیا، کُرآنِ شریف उस کی شفاۓت کرےگا
اور جنت میں لے जाएगा ।

(تاریخ مدینہ قرمشق، ۳/۳۱ معجم کبیر، ۱۹۸/۱۰، حدیث: ۱۰۳۵۰)

M.R.P.
₹ 00/-



Maktabatul
Madina

- 📍 Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 📞 9022177997, 9320558372
- 📍 Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 📞 9327168200
- 📍 421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
- 📞 011-23284560, 8178862570 📞 For Home Delivery: 9978626025 ^{TM+C App}
- 📧 feedbackmmhind@gmail.com 🌐 www.dawateislamhind.net